



Atharva Veda Kand 2

### अथर्ववेद 2.1.1

वेनस्तत्पश्यत्परमं गुहा यद्यत्र विश्वं भवत्येकरूपम्।  
इदं पृश्निरदुहज्जायमानाः स्वर्विदो अभ्यनूषत ब्राः॥१॥

(वेनः) श्रद्धावान् जिज्ञासु, दृष्टा (तत्) उसको (पश्यत्) देखता है, अनुभूति प्राप्त करता है (परमम्) सर्वोच्च (गुहा) गुप्त अवकाश, गुफा (यत्) जो (ब्रह्म) (यत्र) जिसमें (विश्वम्) सब (समूची सृष्टि) (भवति) हो जाता है (एकरूपम्) एकरूप, जुड़ा हुआ (एकसार अवस्था) (इदम्) यह (पृश्निः) भौतिक प्रकृति (आदुहत्) प्राप्त करना (जायमानाः) भिन्न-भिन्न उत्पन्न रूप (स्वः विदः) स्वयं को जानने वाला (अभ्य नूषत) अनेक प्रकार से प्रशंसा और महिमागान करता है (ब्राः) संकल्पवान् लोग।

नोट :- इस मन्त्र का एक पद यजुर्वेद 32.8 में आया है — 'यत्र विश्वम् भवति एकरूपम्', अर्थात् जहाँ सब एकरूप हो जाते हैं, एक शरण में आ जाते हैं।

व्याख्या :-

अद्वैत क्या है?

प्रकृति कहाँ से पैदा होगी?

इस सूक्त के ऋषि 'वेनः' है अर्थात् श्रद्धावान् जिज्ञासु या दृष्टा और इसके देवता हैं 'ब्रह्म'।

वेनः अर्थात् श्रद्धावान् जिज्ञासु, दृष्टा उसको (ब्रह्म को) अपने सर्वोच्च गुप्त अवकाश या गुफा में देखता है और उसकी अनुभूति प्राप्त करता है, जिसमें सब (समूची सृष्टि) एकरूप हो जाते हैं, जुड़े हुए (एकसार अवस्था अर्थात् अद्वितीय या अद्वैत)। इससे (ब्रह्म से) भौतिक प्रकृति भिन्न-भिन्न रूप प्राप्त करती है और संकल्पवान् लोग, स्वयं को जानते हुए, भिन्न-भिन्न प्रकार से उसकी प्रशंसा और महिमागान करते हैं।

जीवन में सार्थकर्ता :-

हर प्रकार की पूजा, प्रेम और यज्ञ कार्य कहाँ पर जाते हैं?

एक बार जब यह विश्वास हो जाये कि ब्रह्म के अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं है तो इस बात में कोई संदेह नहीं रह जाता कि सारी प्रकृति में उसी सर्वशक्तिमान्, सर्वोच्च शक्ति से ही भिन्न-भिन्न रूप प्राप्त किये हैं।

प्रकृति की तरह ही लोग भिन्न-भिन्न रूपों में उसकी पूजा, प्रशंसा और महिमागान करते हैं और हमारे सभी श्रद्धावान् भाव हमारे प्रेम और दूसरों के लिए किये गये त्याग सहित उसी ब्रह्म तक पहुँच जाते हैं। सभी यज्ञ कार्य तो निश्चित रूप से उसके पास पहुँचते हैं, क्योंकि वह हर लाभार्थी और प्रेम किये जाने वाले जीव में उपस्थित होता है।

सूक्ति :- 1. (वेनः तत् पश्यत् परमम् गुहा — अथर्ववेद 2.1.1) वेनः अर्थात् श्रद्धावान् जिज्ञासु, दृष्टा उसको (ब्रह्म को) अपने सर्वोच्च गुप्त अवकाश या गुफा में देखता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



(यत् यत्र विश्वम् भवति एकरूपम् – अथर्ववेद 2.1.1 तथा यजुर्वेद 32.8) जिसमें सब (समूची सृष्टि) एकरूप हो जाते हैं, जुड़े हुए (एकसार अवस्था अर्थात् अद्वितीय या अद्वैत)।

### अथर्ववेद 2.1.2

प्र तद्वोचेदमृतस्य विद्वान् गन्धर्वो धाम परमं गुहा यत्।  
त्रीणि पदानि निहिता गुहास्य यस्तानि वेद स पितुष्वितासत् ॥2॥

(प्र – वोचेत् से पूर्व लगाकर) (तत्) उसका (वोचेत् – प्र वोचेत्) उचित प्रकार से बोलता है, उपदेश करता है (अमृतस्य) अमृत का (विद्वान्) दिव्य ज्ञानी (गन्धर्वः) दिव्य वाणियाँ, दिव्य इन्द्रियाँ धारण करने वाला, ब्रह्म को जानने वाला (धाम) स्थान, लक्ष्य (परमम्) सर्वोच्च (गुहा) गुप्त अवकाश, गुफा (यत्) जो (त्रीणि) तीन (पदानि) पद (निहिता) स्थापित, छिपा हुआ (गुहा) गुप्त अवकाश, गुफा (अस्य) उसकी (ब्रह्म) (यः) जो (तानि) उसको (वेद) जानता है (सः) वह (पितुः) पिता का (पिता) पिता (असत्) होता है।

व्याख्या :-

दिव्य ज्ञानियों को क्या बोलना चाहिए और क्या उपदेश करना चाहिए?

पिता का पिता कौन बनता है?

दिव्य ज्ञानियों को दिव्य वाणी, दिव्य इन्द्रियाँ और ब्रह्म का ज्ञान रखते हुए उचित प्रकार से उसी अमृत के बारे में बोलना और उपदेश करना चाहिए जिसका गन्तव्य स्थान सर्वोच्च गुप्त अवकाश या गुफा है।

ब्रह्मा के तीन पद उस सर्वोच्च गुप्त अवकाश अथवा गुफा में स्थापित, छिपे हुए हैं। जो उसको (ब्रह्म को तथा उसके गन्तव्य स्थान को) जानता है वह पिता का पिता बन जाता है।

जीवन में सार्थकर्ता :-

परमात्मा के तीन पद कौन से हैं?

एक श्रद्धालु जो ब्रह्म को और उसके गन्तव्य स्थान को जानता है वह उस परमात्मा के तीन पदों को जानता है जिसके अनेक आयाम हैं :-

1. सृष्टि का निर्माण, पालन-पोषण तथा विलय।
2. ओ३म् की तीन मात्राएँ – अकार, उकार और मकार।
3. तीन गुण – सत्त्व, रज और तम अर्थात् पवित्रता, गतिविधि और अन्धकार।
4. तीन काल – भूतकाल, वर्तमानकाल और भविष्यकाल।
5. गायत्री के तीन पद – ब्रह्माण्ड की निर्माण शक्ति, ब्रह्माण्ड की बुद्धि और व्यक्तिगत बुद्धि की प्रेरणा।

एक अनुभूति प्राप्त व्यक्ति बिना किसी भेदभाव के हर अवस्था और सभी लक्षणों को परमात्मा में ही देखता है और सदैव अपने मन का संतुलन बनाये रखता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



सूक्ति :- 1. (प्र तत् वोचेत् अमृतस्य विद्वान् गन्धर्वः धाम परमम् गुहा यत् – अथर्ववेद 2.1.2) दिव्य ज्ञानियों को दिव्य वाणी, दिव्य इन्द्रियाँ और ब्रह्म का ज्ञान रखते हुए उचित प्रकार से उसी अमृत के बारे में बोलना और उपदेश करना चाहिए जिसका गन्तव्य स्थान सर्वोच्च गुप्त अवकाश या गुफा है।

2. (त्रीणि पदानि निहिता गुहा अस्य यः तानि वेद सः पितुः पिता असत् – अथर्ववेद 2.1.2) ब्रह्मा के तीन पद उस सर्वोच्च गुप्त अवकाश अथवा गुफा में स्थापित, छिपे हुए हैं। जो उसको (ब्रह्म को तथा उसके गन्तव्य स्थान को) जानता है वह पिता का पिता बन जाता है।

### अथर्ववेद 2.1.3

स नः पिता जनिता स उत बन्धुर्धामानि वेद भुवनानि विश्वा।  
यो देवानां नामध एक एव तं संप्रश्नं भुवना यन्ति सर्वा॥३॥

(सः) वह (परमात्मा) (नः) हमारा (पिता) स्वामी, रक्षक (जनिता) पैदा करने वाला (सः) वह (परमात्मा) (उत) और (बन्धुः) भाई, बांधने की शक्ति (उसके ऊपर बन्धन) (धामानि) स्थान, अवस्थाएँ, गन्तव्य (वेद) जानता है (भुवनानि) स्थानों और जीवों को (विश्वा) सब (यः) जो (देवानाम्) दिव्य का (शक्तियाँ और लोग, ऋषि और देवता) (नामधः) नामों को समझता है (एकः एव) केवल एक (तम्) उसको (संप्रश्नम्) उचित प्रश्न, सभी प्रश्नों, जिज्ञासाओं, खोज और ध्यान साधना का लक्ष्य (भुवना) अस्तित्वमय संसार (यन्ति) प्राप्त होते हैं (सर्वा) सब।

नोट :- यह मन्त्र अथर्ववेद 2.1.3 तथा ऋग्वेद 10.82.3 और यजुर्वेद 17.27 में छोटे-छोटे परिवर्तनों के साथ लगभग समान है। ऋग्वेद और यजुर्वेद में – (1) 'सः' के स्थान पर 'योः' आया है। 'योः' का अर्थ है जो (परमात्मा), (2) 'नामधः' के स्थान पर 'नामधाः' आया है। (3) 'सर्वा' के स्थान पर 'अन्या' आया है। 'अन्या' का अर्थ है अन्य।

व्याख्या :-

सभी दिव्यताएँ और जिज्ञासाएँ कहाँ पर एकीकृत हो जाती हैं?

वह (परमात्मा) हमें पैदा करता है, स्वामी और रक्षक है;

वह हमारा भाई है अर्थात् बांधने की शक्ति (उसके ऊपर बन्धन);

वह सभी स्थानों, अवस्थाओं और गन्तव्यों तथा सभी जीवों को जानता है;

वह केवल एक ही है जो सभी दिव्य (शक्तियों और लोगों, ऋषियों और देवताओं) के नामों को समझता है।

सभी उचित प्रश्न, जिज्ञासाएँ, खोज और ध्यान-साधनाएँ तथा अस्तित्व वाला पूरा संसार उसी में पहुँच जाते हैं।

जीवन में सार्थकर्ता :-

हमारा प्रत्येक सम्बन्ध और हमारी प्रत्येक देखभाल करने वाला कौन है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



परमात्मा का महिमागान करते हुए संस्कृत में एक गान है – त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धु च सखा त्वमेव जो इसी मन्त्र के आधार पर निर्मित प्रतीत होती है।

सभी दिव्यताएँ और सभी जिज्ञासाएँ उसी का रूप ले लेती हैं। इसीलिए एक वास्तविक श्रद्धालु उसकी सर्वोच्चता और बुद्धिमत्ता के प्रति सदैव सचेत रहता है। वह हम सब मानवों के लिए सत्य और सब कुछ है। उसकी बन्धुता और देखभाल आदि को महसूस करते हुए और विश्वास करते हुए कोई भी व्यक्ति किसी भी अवस्था के कारण कभी भी मानसिक असंतुलन महसूस नहीं करेगा।

सूक्ति :- 1. (सः वेद भुवनानि विश्वा – अथर्ववेद 2.1.3, ऋग्वेद 10.82.3 तथा यजुर्वेद 17.27) वह सभी स्थानों, अवस्थाओं और गन्तव्यों तथा सभी जीवों को जानता है;

2. (यः देवानाम् नामधः एकः एव – अथर्ववेद 2.1.3, ऋग्वेद 10.82.3 तथा यजुर्वेद 17.27) वह केवल एक ही है जो सभी दिव्य (शक्तियों और लोगों, ऋषियों और देवताओं) के नामों को समझता है।

3. (तम् संप्रश्नम् भुवना यन्ति सर्वा – अथर्ववेद 2.1.3, ऋग्वेद 10.82.3 तथा यजुर्वेद 17.27) सभी उचित प्रश्न, जिज्ञासाएँ, खोज और ध्यान-साधनाएँ तथा अस्तित्व वाला पूरा संसार उसी में पहुँच जाते हैं।

#### अथर्ववेद 2.1.4

परि द्यावापृथिवी सद्य आयमुपातिष्ठे प्रथमजामृतस्य।  
वाचमिव वक्तरि भुवनेष्ठा धास्युरेष नन्वेक्षो अग्निः॥४॥

(परि) चारों तरफ से (द्यावा पृथिवी) आकाशीय स्वर्ग तथा भूमि (सद्य) अभी (आयम्) मैं आया हूँ (उपातिष्ठे) बैठो, निकट स्थित हो जाओ (प्रथमजाम्) प्रथम पैदा हुआ (परमात्मा, जिसने स्वयं को प्रथम मनुष्य के रूप में और अपने ज्ञान अर्थात् वेद के रूप में व्यक्त किया) (ऋतस्य) वास्तविक सच्चाई का (वाचम् इव) वाणी की तरह (वक्तरि) वक्ता में (भुवनेष्ठाः) सभी शरीरों में स्थापित (धास्युः) धारण करते हुए, पालन-पोषण करते हुए (एषः) यह (परमात्मा) (ननु) निश्चित रूप से (एषः) यह (परमात्मा) (अग्निः) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, प्रथम अग्रणी, अग्नि, ऊर्जा, ताप, बुद्धि।

व्याख्या :-

ध्यानस्थ मन परमात्मा के बारे में क्या अनुभूति प्राप्त करता है?

अभी मैं चारों दिशाओं से आया हूँ, आकाशीय स्वर्ग और भूमि में और वास्तविक सत्य से प्रथम पैदा हुए (परमात्मा जिसने स्वयं को प्रथम मनुष्य और अपने ज्ञान अर्थात् वेद के रूप में अभिव्यक्त किया) के निकट बैठा हूँ, स्थापित हूँ। वक्ता में वाणी की तरह यह (परमात्मा) सभी शरीरों में, उन्हें धारण करते हुए और उनका पालन-पोषण करते हुए स्थित है और निश्चित रूप से यह (परमात्मा) अग्नि अर्थात् सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, प्रथम अग्रणी, अग्नि, ऊर्जा, ताप, बुद्धि है।

जीवन में सार्थकर्ता :-

सर्वत्र मूल शक्ति क्या है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM  
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.  
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171





एक सफल ध्यान मग्न जीवन के बाद, एक योगी, एक आध्यात्मिक पुरुष निर्माता अर्थात् परमात्मा की उपस्थिति को प्रत्येक कण में देखता है और उसकी अनुभूति प्राप्त करता है। वह एक अस्तित्व अर्थात् आत्मा और वस्तु की एकता का दृष्टा बन जाता है। असंख्य नामों और रूपों के बावजूद उसके लिए कोई दूसरी मूल शक्ति नहीं है। परमात्मा पर ध्यान करने का हमारे लिए यही सर्वोच्च और एक मात्र लक्ष्य होना चाहिए कि हम उस समूची सृष्टि की मूल शक्ति पर अपने अन्दर ध्यान करें न कि उस परमात्मा की खोज में एक स्थान से दूसरे स्थान पर भटकें जो निश्चित रूप से हमारे अन्दर ही विद्यमान है।

एक बार योगी जब एक वास्तविक सत्य की अनुभूति प्राप्त कर लेता है तो वह सभी अवस्थाओं में एक समान मन वाला हो जाता है और सभी जीवों में कुछ भी भेदभाव नहीं करता, क्योंकि उसे यह अनुभूति होती है कि हर व्यक्ति पर वही परमात्मा शासन कर रहा है।

### अथर्ववेद 2.1.5

परि विश्वा भुवनान्यायमृतस्य तन्तुं विततं दृशे कम्।  
यत्र देवा अमृतमानशानाः समाने योनावध्यैरयन्त ॥5॥

(परि) सभी दिशाओं से (विश्वा) सब (भुवनानि) लोक, अस्तित्वमय संसार (अयम्) मैं आया हूँ (ऋतस्य) वास्तविक सत्य का (तन्तुम्) धागे (तन्त्र) (विततम्) फैले हुए (सब तरफ) (दृशे) देखने के लिए (कम्) उसे (परमात्मा को) (यत्र) जिसमें (देवाः) सभी दिव्य (शक्तियाँ तथा लोक) (अमृतम्) अमृत, आनन्द की अवस्था (आनशानाः) प्राप्त करता है, आनन्दित होता है (समाने) समान (योनौ) जीने का स्तर (अधि ऐरयन्त) उसकी तरफ पहुँचता है (परमात्मा की तरफ)।

नोट :- अथर्ववेद 2.1.3 तथा 2.1.5 की यजुर्वेद 32.10 के साथ कुछ समानता है। अथर्ववेद 2.1.3 तथा यजुर्वेद 32.10 में पहली पंक्ति का पहला पद समान है। अथर्ववेद 2.1.5 तथा यजुर्वेद 32.10 की दूसरी पंक्ति कुछ अन्दर के साथ समान है।

व्याख्या :-

सभी दिव्य (शक्तियाँ और लोग) कहाँ पहुँचते हैं?

सभी दिव्य (शक्तियाँ और लोग) किसका आनन्द लेते हैं?

मैं सभी लोकों अर्थात् अस्तित्वमय संसार की सभी दिशाओं में से आया हूँ, उस परमात्मा की सच्चाई जानने के लिए जिसके आगे (तन्त्र) सब तरफ फैले हुए हैं; जिसमें सभी दिव्य (शक्तियाँ और लोग) उसके समान स्तर की तरफ (परमात्मा की तरफ) पहुँचते हैं और अमृत आनन्द की अवस्था का आनन्द लेते हैं।

जीवन में सार्थकर्ता :-

एक सच्चा श्रद्धालु परमात्मा के साथ स्थाई एकता के आनन्द को प्राप्त करने के लिए क्या करता है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



इस सृष्टि में सब स्थानों पर सर्वत्र कोई व्यक्ति परमात्मा के विशाल तन्त्र को देख सकता है। किन्तु उस परमात्मा की दिव्य (शक्तियाँ और लोग) ही केवल उसके साथ एकता के आनन्द की अनुभूति का लाभ उठा सकते हैं।

उस स्थाई एकता के आनन्द का लाभ उठाने के लिए निश्चित रूप से एक श्रद्धालु भक्त को इस सृष्टि में आनन्द लेने की प्रत्येक रुचि को समाप्त करना होगा। कर्म के नाम पर लोग केवल दूसरों के कल्याण के लिए बहुत से कार्य करते हैं, परन्तु यह सब कार्य कर्त्ता भाव के अहंकार के बिना और किसी भी प्रकार की इच्छा के बिना करने चाहिए। यहाँ तक कि किसी कार्य को करने की इच्छा भी नहीं होनी चाहिए। अतः जो कार्य सामने आ जाये उसे निर्लेप भाव से करना चाहिए।

**This file is incomplete/under construction**

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171